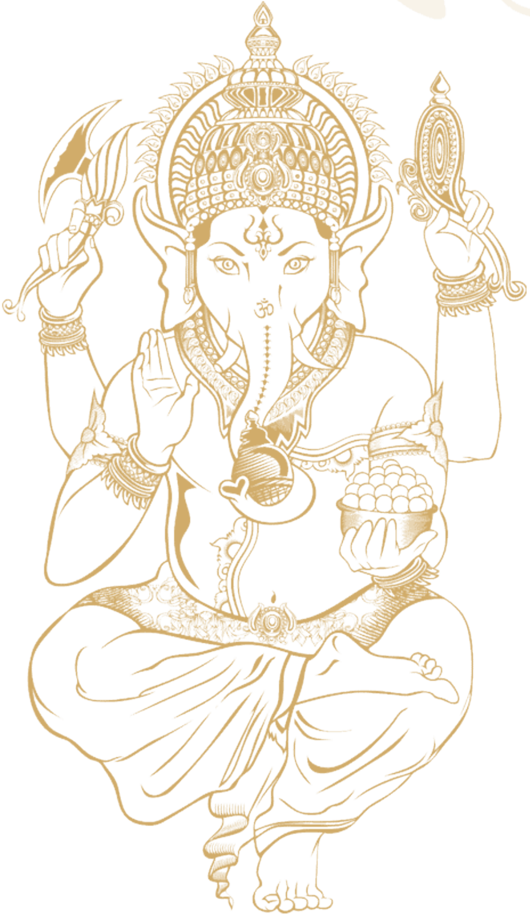

Mrs. Jasbir kaur baby

05 Dec 2025

10:07 AM

Mumbai

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120399401

तिथि 05/12/2025 **समय** 10:07:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Mumbai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:13
अक्षांश 18:58:00 उत्तर **रेखांश** 72:50:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:38:40 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	14:25:17 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:09:22 घं	योनि	सर्प
सूर्योदय	06:58:16 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:00:34 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	चतुष्पाद
शक संवत	1947	वर्ग	मृग
मास	पौष	युँजा	पूर्व
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	वू-वुभेश
नक्षत्र	रोहिणी	पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
योग	साध्य	होरा	शनि
करण	बालव	चौघड़िया	अमृत

	विंशोत्तरी	योगिनी
	चन्द्र 0वर्ष 9मा 14दि	सिद्धा 0वर्ष 6मा 19दि
	चन्द्र	सिद्धा
	05/12/2025	05/12/2025
	20/09/2026	25/06/2026
	00/00/0000	00/00/0000
	00/00/0000	00/00/0000
	00/00/0000	00/00/0000
	00/00/0000	00/00/0000
	00/00/0000	00/00/0000
	00/00/0000	00/00/0000
	05/12/2025	00/00/0000
शुक्र	21/03/2026	05/12/2025
सूर्य	20/09/2026 उल्का	25/06/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:33:59	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			19:04:10	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	मित्र राशि	1.19	मातृ	पितृ	साधक
चंद्र			22:16:47	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.30	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	28:11:28	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	स्वराशि	0.95	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध			28:47:06	तुला	विशाखा	3	गुरु	सूर्य	मित्र राशि	1.48	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		00:01:24	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.43	कलत्र	धन	क्षेम
शुक्र			11:14:57	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	सम राशि	1.07	पुत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			00:58:55	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.83	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		19:27:56	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		19:27:56	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

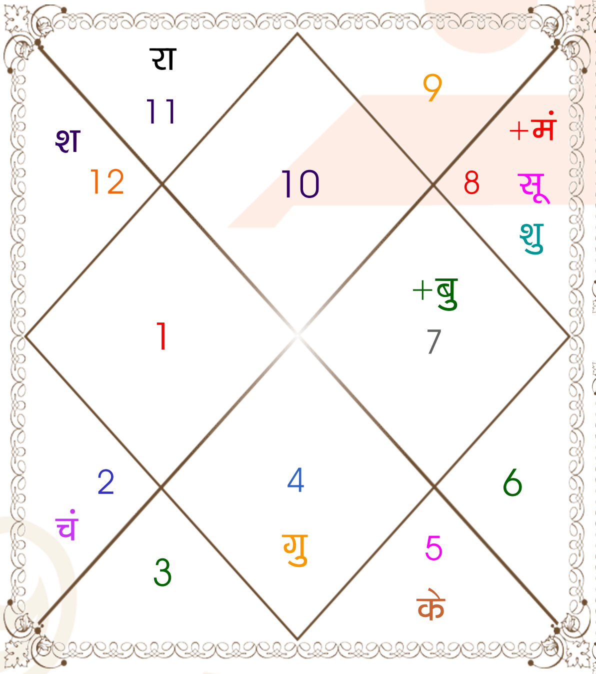

चन्द्र कुंडली

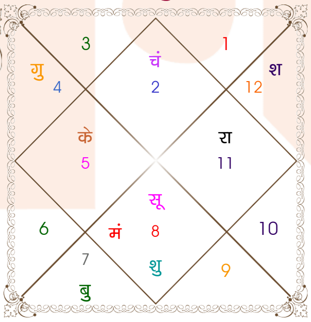

नवमांश कुंडली

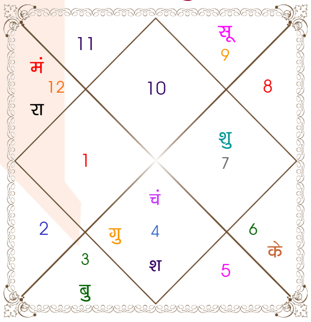

सर्वाष्टकवर्ग

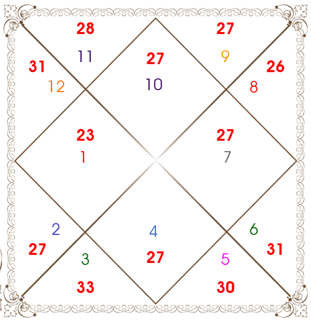

दशमांश कुंडली

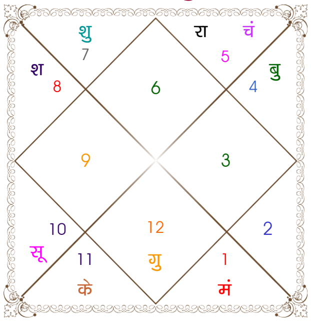

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है अतः आपकी जन्मराशि वृष तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका मूषक वर्ग, अन्त्य नाड़ी, मनुष्य गण, वैश्य वर्ण तथा सर्प योनि होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्मनाम का प्रथम अक्षर "वु" या "वू" से प्रारम्भ होगा यथा बुद्धिवल्लभ, बुद्धराम आदि।

आप धर्म के कार्य करने वाले तथा ईश्वर पर विश्वास रखने वाले आस्तिक एवं श्रद्धालु प्रकृति के पुरुष होंगे। आप सरल स्वभाव के होंगे तथा देखने में आपका स्वरूप सुन्दर होगा। बोलने की कला में आप अत्यन्त चतुर होंगे। किसी भी आदमी को सटीक उत्तर उचित समय पर देना आपकी विशेषता होगी। आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को सुगमतापूर्वक तथा स्पष्टरूप से समझाने की कला में आप अति निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आप आजीवन धन से परिपूर्ण रहेंगे धनाभाव आपके पास नहीं रहेगा। आप कृतज्ञता के गुण से भी युक्त रहेंगे। यदि कोई व्यक्ति आपके ऊपर छोटा सा भी उपकार करेगा तो आप उसे बहुत श्रेय देंगे तथा हृदय से आभार प्रकट करेंगे। आपको उच्चाधिकार या मंत्री वर्ग से पूर्ण सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। आप प्रिय बोलने वाले तथा सत्य का अनुपालन करने वाले होंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

सामान्य रूप से शरीर में स्वस्थता बनी रहेगी तथा रोगाभाव रहेगा। आप सदैव उत्साह से युक्त रहेंगे तथा इसी उत्साह से जीवन में बहुत उन्नति करेंगे। आपका चाल चलन उत्तम एवं अन्य द्वारा प्रशंसनीय रहेगा।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप आत्मिक शुद्धता एवं पवित्रता के प्रति अत्यन्त सजग रहेंगे तथा आजीवन आत्मा तथा शरीर को मलिनता से दूर ही रखेंगे। आप स्थिर बुद्धि के व्यक्ति होंगे अतः जो भी कार्यारम्भ करेंगे उतावली या शीघ्रता से नहीं अपितु एकाग्रता और तल्लीनता के साथ उसे पूर्ण करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ होगा। अन्य जनों के दोषों को जानने में आप सक्षम रहेंगे तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रुचि रहेगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

आप वृष राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपका वर्ण लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा गाल अल्प मात्रा में स्थूल होंगे। आपकी आँखें बड़ी तथा मोटी होंगी। अल्प रूप से आलस्य का समावेश आपकी प्रकृति में रहेगा। कुलीन लोगों अर्थात् श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धाभाव तथा सेवा का भाव रहेगा। ब्राहमण तथा गुरू के भी आप भक्त होंगे। इनकी आज्ञा पालन करना आप अपना प्रिय एवं आवश्यक कर्तव्य समझेंगे। आपकी प्रकृति वात तथा कफ मिश्रित होगी। आपका जीवन प्रायः सुख से व्यतीत होगा। आप बुद्धिमान तथा दानी भी होंगे एवं बाल आपके घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करेंगे। दान देने की प्रवृत्ति आपके अन्दर नैसर्गिक रूप से होगी। शुद्धता एवं सफाई पसन्द व्यक्ति होंगे। कार्यों को आप चतुराई से पूर्ण करेंगे। आप बलवान होंगे तथा धनागम प्रचुर मात्रा में होगा फलतः आपकी प्रवृति विलासी होगी जिसके कारण आप भौतिक सुख साधनों पर उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता भी आप में विद्यमान रहेगी। आपके सभी मित्र सद्गुणी एवं अच्छे होंगे तथा मित्रता आपकी दीर्घ काल तक स्थाई रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके मुख तथा जान्वाकृति दीर्घ होगी। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट एवं परिश्रम से व्यतीत होंगे तथा अन्तिम दो भाग सुख एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होंगे। त्याग एवं क्षमाशीलता की भावना से आप पूर्ण रूप से युक्त रहेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में सपरिश्रम कष्ट सहने पड़ेंगे। आपकी पीठ, मुख तथा बगल में तिल, मस्सा या व्रणादि का निशान हो सकता हैं।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपका चाल चलन तथा व्यवहार श्रेष्ठ एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप यशस्वी होंगे। तथा आजीवन धन का उपयोग करेंगे।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा काले घुंघराले बालों से युक्त रहेंगे। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय तथा शुद्धाशुद्धि का तत्काल निर्णय करने वाली होगी। चाल आपकी सुन्दर होगी तथा शरीर एवं शरीर के अंग दीर्घ एवं सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यो को दक्षता से पूर्ण करेंगे। दूसरे की भलाई करने की इच्छा भी आपके मन में रहेगी। इस प्रकार अपने सत्कार्यो तथा पुण्य के कार्यो से अपना जीवन आप सुखपूर्ण व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आप देखने में सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। मुखमण्डल थोड़ा दीर्घाकृति का होगा तथा आप सविलासगमनप्रिय होंगे। कष्टों को सहन करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। आप उच्चधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति भी हो सकते हैं। धन एवं ऐश्वर्य से आप आजीवन समृद्ध रहेंगे। आपके पेट में जठराग्नि की प्रबलता होगी। स्त्री वर्ग में आप काफी लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप सुस्वभाव से युक्त तथा भगवान शंकर एवं विष्णु की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वेबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा श्रद्धालु व्यक्ति होंगे। देवता तथा ब्राहमणों के आप अनन्य भक्त होंगे। आप श्रद्धा सहित इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। यदा कदा अभिमान का अहसास भी आपके द्वारा अन्य लोग करेंगे। आपके पास धन का आगमन पर्याप्त मात्रा में होता रहेगा। करूणा तथा दया की भावना से आप ओत प्रोत रहेंगे तथा समय समय पर दीन दुखियों की सेवा तथा सहायता करेंगे। आप एक से अधिक कार्यो अथवा कलाओं के ज्ञाता होंगे। ज्ञान प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। आपका शरीर कान्तियुक्त होगा तथा बहुत से लोगों को आप सुख पहुँचाने वाले होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप आजीवन विपुल धन के स्वामी रहेंगे तथा मान सम्मान आपका बना रहेगा। आप एक अच्छे निशानेबाज भी हो सकते हैं। आप गौर वर्ण के होंगे तथा नगरवासियों को वश में करने की शक्ति आपके पास होगी अर्थात् आप किसी नगर के सम्माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी आँखें भी बड़ी बड़ी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण कभी कभी आप बहुत ही क्रोधित होंगे। इसी प्रकार कभी कभी आप कठोरता का भी परिचय देंगे कि देखने वाले भी आश्चर्य चकित रह जाएंगे। यदि कोई आपके ऊपर उपकार करेगा तो आप उसे पूर्ण रूप से नहीं मानेंगे। चंचल प्रवृति से आप युक्त रहेंगे तथा जिहवा भी आपकी चंचल होगी अथवा चटपटे स्वाद आपको अच्छे लगेंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।

मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का

अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए मार्ग शीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियाँ, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण, शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि का चन्द्रमा ये सब अशुभ फलों के देने वाले हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य, पंचमी दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियों, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं शकुनिकरण में कोई शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण लेन देन, क्रय विक्रय आदि कार्य न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो मे त्याज्य समझें इन दिनों शारीरिक सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जब कभी आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक शान्ति भंग हो रही हो, शरीर में व्याकुलता हो रही हो। व्यापार नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्प, आदि पदार्थो का दान करना चाहिए इससे अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा मन को शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा कराने पर भी अनिष्ट फलों में कमी हो सकती है। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान विष्णु या शिव की आराधना भी कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com